यूनिट 3 भारत की मंच कलाएं

सूचीपत्र

3.0 भूमिका

3.1 अधिगम के परिणाम

3.2 मंच कलाएं

3.3 मानव समाज में मंच कलाएं

3.4 कला की भाषा

3.5 कला के सिद्धांत

3.6 भारत की मंच कलाएं

3.7 भारतीय संगीत विधाएं

3.8 लोक मंच कलाएं

3.9 सारांश

3.10 प्रश्नावली

3.0 भूमिका

यूनिट एक और दो में हमने संस्कृति किसे कहते हैं ये जाना साथ ही भारतीय संस्कृति का क्रमिक विकास, इसकी विशेषताएं , इस पर विभिन्न कारणों से समय समय पर आए बदलाव, इसकी विशिष्टता, बहुलतावाद, और विविधता मे एकता की इसकी प्रकृति के बारे में हमने समझा। इस यूनिट में हम भारत के विभिन्न मंच कलाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे साथ ही ये भी समझेंगे की इन कलाओं में किस प्रकार से भारतीय संस्कृति प्रतिबिंबित होती है।

अधिगम के परिणाम

- इस पाठ के अध्ययन के बाद विद्यार्थी
- मंच कलाओं के संबंध में बता पाएंगे
- मंच कलाओं के विभिन्न शैलियों के संबंध मे समझा पाएंगे
- लोक कला तथा शास्त्रीय कलाओं में अंतर बता पाएंगे

मंच कलाएं

मंच कलाओं पर चर्चा करने से पहले आइए पहले जाने मंच कलाएं क्या हैं। मंच कलाएं वे कलाएं हैं जिन्हे प्रदर्शित करने के लिए मंच अर्थात एक निश्चित स्थान की जरूरत रहती है। इन कलाओं को प्रदर्शित करने के लिए कलाकार अपना कंठ स्वर, और शरीर का इस्तेमाल करता है। दृश्य कला से मंच कलाएं भिन्न होती है; जिसमे कलाकार केवल दर्शनीय वस्तु जैसे विभिन्न तरह की पटों पर विभिन्न तरह के रंगों से, वस्त्रों से या किसी भी और वस्तु से चित्र, मूर्ति, आकृति आदि अपने क्रियात्मक सूझ बूझ से बनाते हैं। मंच कलाये वे कलाएं हैं जिसमें कलाकार अपने क्रियात्मक सूझ बूझ से दर्शकों के सामने आकर जीवंत प्रस्तुति देतें हैं। ये प्रस्तुतियाँ गायन, वादन, नृत्य या अभिनय आदि से संबंधित होती हैं।

मानव समाज में मंच कलाएं

मानव समाज मे मंच कलाओं का अस्तित्व प्रागैतिहासिक यूग से ही प्रचलित रहा है। भारत सहित विश्व के विभिन्न देशों के प्रागैतिहासिक गुहा चित्रों से ये प्रमाणित होता है कि मानव सभ्यता के आदि काल से ही समाज में गायन, वादन, नृत्य, अभिनय आदि का प्रचलन रहा है। कई गुहा चित्रों में समूह गान और नृत्य तत्कालीन विभिन्न वाद्यों के संगत के साथ भी चित्रित किए गए हैं। कुछ नृतत्त्व विज्ञानियों के मत से संगीत, नृत्य और अभिनय आदि कलाएं ईश्वर को प्रसन्न करने के प्रयोजन से सृष्ट हुआ। परंतु कुछ अन्य नृतत्त्व विज्ञानियों के मतानुसार आदि मानवों मे गायन आदि के गुण धीरे धीरे पनपे हैं जब उन्होंने अपने आस पास के जीव जन्तु पक्षी अदियों के चाल चलन और बोली को नकल करने लगे। हालांकि इन सभी बातों का कोई प्रमाण आज इतने युगों बाद जुटाना तो संभव नहीं है, केवल कल्पना ही किया जा सकता है की सभ्यता के उषाकाल में मनुष्य समाज में इन में से किसी एक तरीके से इन कलाओं का जन्म या प्रचलन हुआ होगा, क्यूंकी प्रमाण बताते हैं की आदिम समाज में ये सभी कलाएं विद्यमान थी। जैसे जैसे मानव समाज ने प्रगति की ये कलाएं भी विकसित होती चली गईं। मानव समाज जहां जहां बसती चली गई ग्रामाञ्चल हो या नगर मंच कलाओं ने भी अपने आप को आसपास के परिवेश का अनुसार ढाल लिया और इसी कारण से लोक परंपरा और शास्त्रीय परंपरा दो अलग अलग धाराओं मे इन कलाओं का विकास हुआ।

कला की भाषा

सभी कलाओं की अपनी भाषा होती है जिस के द्वारा उसकी अभव्यक्ति होती है। मनुष्य में भी अंतर्निहित गुण होती है की सृजनात्मक अभिव्यक्तियों को सराह सके और खुद भी सृजनात्मक तरीके से अपने आप को अभिव्यक्त कर पाए। साहित्य में आप जानते हैं की शब्द ही उसकी भाषा है। सही शब्दों और अलंकारों के चयन से सुगठित वाक्य साहित्य की गुणवत्ता को बढ़ाती है। इस कला में परिपक्वता साहित्य की विभिन्न पहलुओं की अच्छी जानकारी , शब्दों का सही चयन और प्रयोग तथा साहित्यिक रस बोध के विकास से हासिल हो पाती है।

नाटक की बात करें तो इसकी अभिव्यक्ति के लिए सबसे पहले एक निर्धारित स्थान या मंच की जरूरत रहती है। इस कला के अभिव्यक्ति के लिए साहित्य के साथ साथ, अभिनेता, वाचिक और आंगिक अभिनय, वेशभूषा, मुख भाव, मंच पर आलोक सज्जा तथा मंच सज्जा सभी इस कला की अभिव्यक्ति की भाषा है। इस प्रकार से मंचस्थ नाटक एक सृजनात्मक अभिव्यक्ति का रूप लती है।

गायन तथा वादन दोनों प्रकार के संगीत मे ही ध्वनि या नाद ही मूलभूत तत्त्व है। सात शुद्ध और पाँच विकृत स्वर संगीत के भाषा के अक्षर हैं। इन्ही अक्षरों के विभिन्न संयोजन से राग बनती है। स्वर, लय तथा ताल संगीत के अभिव्यक्ति के माध्यम हैं जिनके सही प्रयोग से ये सुखकर और आनंददायी बनता है।

देह की विभिन्न भंगिमाएं, पदसञ्चार, हाथ की मुद्राएं और मुखाभिव्यक्ति के साथ उपयुक्त संगीत और वेश भूषा नृत्य कला की अभिव्यक्ति के माध्यम है जिस से नव रसों की निष्पत्ति होती है। इन्ही के सहायता से एक नृत्य प्रस्तुति सुंदर और प्रभावशाली बनता है।

कला के सिद्धांत

कुछ मूल सिद्धांत हैं जो सभी कलाओं के लिए सामान्य हैं वे हैं सामग्री, प्रारूप, संतुलन, लय, प्रतीकात्मकता, अनुपात, सामंजस्य, भावनात्मक अभिव्यक्ति और माध्यम पर सम्पूर्ण नियंत्रण।

सामग्री: चित्र, नाटक, संगीत या नृत्य आदि विभिन्न कलाओं में अंतर्निहित तत्व को सामग्री कहा जाता है। चित्रकार, नर्तक या संगीतकार या कोई भी कलाकार एक पूरी कहानी या घटना की कल्पना

करता है जिसे वो दर्शकों के सामने खूबसूरती से प्रस्तुत करना चाहता है। उनकी कल्पना या अवधारणा ही साहित्य, नाटक, या किसी भी कला का विषय वस्तु या सामग्री कहलाती है जिसे कलाकार अपने कला के द्वारा व्यक्त करते है। कलाकार लगातार अपने कला के माध्यम से उस विषय वस्तु का श्रेष्ठतम प्रस्तुतिकरण के बारे में प्रयत्नशील रहता है। नौवीं शताब्दी में एक महान कश्मीर विद्वान आनंदवर्धन विषय वस्तु के अंतर्निहित अर्थ को ध्वनि और भावनात्मक तत्व को रस ध्वनि के नाम से उल्लेख करते हैं। इस प्रकार सामग्री किसी भी कला का एक महत्वपूर्ण अंग है।

प्रारूप: प्रारूप अथवा ढांचा किसी भी कला को दर्शकों के समक्ष मूर्त करता है। मंच कला में प्रारूप को इस प्रकार समझा जा सकता है जैसे शास्त्रीय संगीत के प्रारूप है खयाल, ध्रुपद या कृति, नृत्य के प्रारूप हैं कत्थक भरतनाट्यम आदि और नाट्य के प्रारूप हैं स्किट, एकांकी नाटक या सम्पूर्ण नाटक आदि। इस प्रकार प्रारूप को कला की अवयव माना जाता है जिसके बिना कला को व्यक्त नहीं किया जा सकता है।

संतुलन: प्रत्येक कला की भाषा में कई आंतरिक तत्वों के बीच संतुलन होना आवश्यक है। कला के प्रारूप के अनुसार सामग्री के अंतर्निहित भाव को सटीक अलंकरणों के द्वारा चुने हुये कला के माध्यम से चित्रित करने में संतुलन की अहम भूमिका होती है। संगीत के सामग्री को स्वर, अलंकार, आलाप, तान आदि के द्वारा संतुलित रूप से चुने हुए प्रारूप के अनुसार प्रस्तुत करने में कलात्मक अभिव्यक्ति में गुणवत्ता के स्तर पर वृद्धि होती है। कला के गुणवत्ता के लिए संतुलन एक महत्वपूर्ण कारक है।

लय: लय न केवल संगीत और नृत्य के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि अन्य कलाकृतियों में भी महत्वपूर्ण है जैसे साहित्य के शब्दों में संवेदना के रूप में, चित्रकला में ब्रश स्ट्रोकस के रूप में, नृत्य में शारीरिक आंदोलन और गति के रूप में और संगीत में भी स्वर संचालन में गति के रूप मे लय का होना अनिवार्य है। यहां तक कि मनुष्य का अस्तित्व भी लयबद्ध श्वास के कारण है। न केवल संगीत, नृत्य और रंगमंच कला में लय एक अपरिहार्य हिस्सा है दृश्य कला रूपों में भी यह अंतर्निहित रूप में विद्यमान है।

प्रतीकात्मकता: सामग्री या कहानी का अर्थ नृत्य में हाथ के मुद्राओं तथा नाटक में विभिन्न प्रकार के चाल या परिधानों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है, संगीत में राग मनोदशाओं को उद्घाटित करते हैं। इसी तरह आकृति, रूपांकनों, शारीरिक भंगिमाएं, और रंगों का चित्रकला में प्रतीकात्मक रूप में व्यवहृत होता है। ये सभी संस्कृति के साथ विकसित हुए हैं। उदाहरण के लिए, सफेद या नीले रंग शांति का प्रतीक हैं, जैसे हिन्दुस्तानी संगीत में राग भैरव सुबह के समय का द्योतक है, मंच की स्थापना में एक भी पेड़ खुली जगह का प्रतीक है, आदि।

भावनात्मक अभिव्यक्ति: सभी कलाओं का मूल तत्व मानविक भावनाएं हैं। भावनाएं न हो तो कला अपना सार खो देती है। नाटक और नृत्य में चरित्र और विषय के आधार पर विभिन्न प्रकार की भावनाएं पैदा होती हैं। रागों में भी अलग-अलग भावनाएं पैदा करने की अंतर्निहित गुण होती है। नवरस - नौ प्रकार के मनोभाव हैं जो सभी कलाओं में कलात्मक अभिव्यक्ति की आत्मा की तरह हैं। दृश्य और मंच दोनों कलाओं में वे दर्शकों को प्रभावित करते हैं, कला सामग्री के अंतर्निहित भावना को दर्शकों में संप्रेषित करते हैं और इस प्रकार से दर्शकों में कलात्मक अनुभूति पैदा करते हैं। इससे कलात्मक अभिव्यक्ति में मौलिकता का पता चलता है।

अनुपात: अनुपात एक सिद्धांत है जो कला संरचना का सहायक है। अन्यथा यह समझना मुश्किल है कि कहां से शुरू करें और कहां खत्म करें। यदि हम आकार में एक रूप के बारे में नहीं सोचते हैं और जिस क्रम में इसे कला में लाया जाना चाहिए, कला अभिव्यक्ति में भ्रम पैदा करती है। संगीत में यह

आवाज और अन्य उपकरणों के साथ इसके संयोजन को ठीक करता है। चित्रकार या मूर्तिकार को उन आकारों के बारे में भी सोचना पड़ता है जिन्हें पत्थर या चित्र में उकेरना है । इस सिद्धांत का निर्वाह दृश्यकला में अधिक होते दिखता है ।

सामंजस्य : उपर्युक्त सिद्धांतों में से प्रत्येक एक स्वतंत्र तत्व है। यदि इसे अन्य सिद्धांत के साथ उचित समन्वय के बिना व्यक्त किया जाता है, तो यह दर्शकों में रसानुभूति का संचार नहीं कर पता । आवश्यक अनुपात, रंग प्रभाव और भावनात्मक गुण, प्रारूप, सामग्री, संतुलन और लय जैसे रचना संबंधी तत्व, इन सब का जब कला में सामंजस्यपूर्ण व्यवहार होता है, तो कला आनंददायक होता है अन्यथा ये अनुभव अत्यंत दुखदायी हो सकता है।

माध्यम पर दक्षता : प्रशिक्षण से किसी भी कला के माध्यम से प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त करने की दक्षता प्राप्त किया जा सकता है। उदाहरण के लिए नृत्य की मुद्राएं और पदसञ्चालन, संगीत में कंठ साधना और राग गायन मे की क्षमता आदि । एक बात सुनिश्चित है कि माध्यम पर दक्षता केवल निरंतर अभ्यास और सुधार के साथ ही संभव है। सभी महान कलाकार अपनी बुनियादी बातों को पूरा करते हैं और कठोरता से अभ्यास करते हैं। निष्पादन का कौशल को कला की गुणवत्ता के रूप में देखा जाता है और इसकी सफलता के लिए आवश्यक भी है।

भारत की मंच कलाएं

भारत में कलाओं के विकास के दो परम्पराएं हैं – शास्त्रीय और लोक कला । शास्त्रीय कलाएं वे हैं जो बौद्धिक समाज के बोध को ध्यान में रखते हुए पीढ़ी दर पीढ़ी विकसित हुए हैं जिसने बौद्धिक और नागरिक समाज में अपना मर्यादापूर्ण और ऊंचा स्तर बनाया है । शास्त्रीय ढंग से बनाई गई कलाकृतियों को भी समाज में में सम्मानित स्थान प्राप्त है । सभी शास्त्रीय कलाएं चाहे वो संगीत हो नृत्य हो या नाटक एक नियम के तहत प्रस्तुत किए जाते हैं । भारत में उपलब्ध प्राचीन लक्षण ग्रंथ कला संबंधी शास्त्र का आधार हैं । परंतु भारत में मंच कलाओं को गुरु शिष्य परंपरा के तहत गुरु के सामने उनके निगरानी में ही सीखा जाता है । इन कलाओं में सिद्धांतों को अहम स्थयन प्राप्त है । भावनाओं की सटीक अभिव्यक्ति ही कला का मूल उद्देश्य राहत है । हमारे प्राचीन ग्रंथों में शास्त्रीय संगीत को मार्गी संगीत कहा गया है जबकि लोक कलाओं को देशी कहा गया है । इसके अपने निश्चित नियम हैं जो गुरु के सान्निध्य में रहकर ही सीखा जाता है ।

ऐसे भारतीय संगीत और नृत्य परम्पराएं जो प्राचीन काल से प्रतिष्ठित संगीतज्ञों और नृत्य गुरुओं द्वारा स्थापित नियमों पर आधारित है उन्हे शास्त्रीय संगीत या नृत्य के रूप में स्वीकृति दी जाती है ।

भारतीय नृत्य परम्पराएं

भारत में नौ प्रकार के शस्त्रीय नृत्य हैं जो इस प्रकार हैं –

1. कत्थक – उत्तर भारत में विकसित शास्त्रीय नृत्य
2. भरतनाट्यम – तमिल नाडु में विकसित शास्त्रीय नृत्य
3. कुचीपुड़ी – आंध्र में विकसित शास्त्रीय नृत्य
4. कथकली – केरल में विकसित शास्त्रीय नृत्य
5. ओडिसी – ऑडिशा में विकसित शास्त्रीय नृत्य
6. मोहिनीअट्टम – केरल में विकसित शास्त्रीय नृत्य

7. मणिपुरी – मणिपुर में विकसित शास्त्रीय नृत्य

8. छऊ – झाड़खंड में विकसित शास्त्रीय नृत्य

9. सत्रिय - असम में विकसित शास्त्रीय नृत्य

भारतीय संगीत विधाएं

शास्त्रीय संगीत

भारत में दो शास्त्रीय संगीत की धाराएं हैं

1. हिन्दुस्तानी / उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत

2. कर्णाटक / दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत

सुगम संगीत

शास्त्रीय संगीत के अलावा भारत में एक और प्रकार का संगीत है और वह है सुगम संगीत । इस प्रकार के संगीत में कलाकार को शास्त्रीय संगीत की तरह स्वत:स्फूर्त सांगीतिक सृजनात्मकता दिखाने का मौका नहीं मिलता, और ना ही लोक संगीत के तरह अपने ही बोली में स्वतः बोल बना कर किसी भी लोक धुन में पिरोकर गा पाता है । इन दोनों से अलग, सुगम संगीत गेय कविताओं पर आश्रित रहती है । इस प्रकार के संगीत मे सांगीतिक सृजनात्मकता निर्भर करता है संगीतकार के ऊपर जो इन गीतों को संगीत बद्ध करते हैं; कलाकार, जो इन गीतों को गा कर प्रस्तुत करते हैं, उनके लिए सांगीतिक सृजनात्मकता दर्शाने का बहुत अधिक मौका नहीं मिलता । इन संगीतबद्ध गीतों की प्रस्तुति में साहित्य में निहित अर्थ, भाव और संगीत को कलाकारों के द्वारा दक्षतापूर्वक दर्शकों के सामने उन्मोचित करना ही कलाकारों की सफलता मानी जाती है । कभी कभी कुछ कलाकारॉ में गीतों को संगीतबद्ध करने का हुनर भी होता है पर ये जरूरी नहीं की हर कलाकार संगीतकार भी हो या हर संगीतकार एक अच्छा गायक भी हो । और कुछ ऐसे भी दुर्लभ कवि भी होते हैं जो एक अच्छे गीतकार के साथ साथ अच्छे संगीतकार और अच्छे गायक भी होते हैं। जैसे बंगाल के कविगुरु रबीन्द्र नाथ ठाकुर, काजी नजरुल इस्लाम आदि जिनको बंगाल के सुगम संगीत में एक नया वर्ग सृजन करने का श्रेय भी प्राप्त है । अर्थात बंगाल के सुगम संगीत में रबीन्द्र संगीत, नजरुल गीति आदि वर्गों का सृजन इन्ही कवि-गीतकार के अवदानों के कारण हुआ । खैर, अधिकतर समय मे संगीतकार अपने पसंद के गीत को संगीतबद्ध करते हैं फिर बाद में वे खुद उसे गाते हैं या किसी मनपसंद गायक से गवाते हैं। अक्सर हम ये फिल्म संगीत के क्षेत्र में देखते है।

गीत, ग़ज़ल, नज़्म, भजन, फिल्म संगीत आदि सब ही सुगम संगीत के दायरे में आते हैं। ये अक्सर हिन्दी और आंचलिक भाषाओं में लिखे जाते है । दक्षिण में सुगम संगीत को ललित संगीतम् कहा जाता है ।

लोक मंच कलाएं

शहरों से निकल कर यदि हम अपने आस पास देखें तो कई छोटे बड़े गाँव और जनजातीय क्षेत्र हमें दिखेंगे जहां कि ज़िंदगी, बोली, बोलचाल के ढंग और जीवन शैली बिलकुल ही अलग है । जनजातीय क्षेत्र में रहनेवाले आदिवासी समाज ग्रामीण और शहरी समाज से भिन्न होते हैं । उनकी अपनी बोली, अपनी अलग खानपान, अपने देवी देवताएं और अपने अलग रीति रिवाज होते हैं । अक्सर वे अपने वस्त्र और बर्तन खुद ही बनाते हैं । इसी के साथ उनकी मनोरंजन की शैली भी अलग ही होती है जो भारतीय संस्कृति को समृद्ध करती है । उनके नृत्य गीत अलग होते हैं जिन्होंने भारत में

अलग पहचान बनाई है, जैसे भील और गोंड जाती की नृत्य शैली। राजस्थान के बंजारा जाती तो प्रसिद्ध है अपने रंगीन वेश भूषा, नृत्य, और गीत आदि के लिए। आदिवासियों के रीति रिवाज, गीत संगीत आदि की और अधिक जानकारी एक अलग ही विषय है पढ़ने लिखने के लिए।

ग्रामीण समाज का गीत संगीत भी लोक कलाओं के अंतर्गत आता है। ऐसा माना जाता है की सभी शास्त्रीय कलाओं के बीज लोक कलाओं में पाए जाते हैं। साधारण लोगों की अभिव्यक्ति जिन गीत, नृत्य, चित्रकला आदि के माध्यम से व्यक्त किया जाता है वे लोक कलाएं कहलतीं हैं। अधिकतर लोक कलाएं किसी न किसी सामाजिक रीति रिवाज या पर्व से जुड़े हुए होते हैं। ऐसे संगीत, नृत्य, गीत और रूपांकन ग्रामीण लोगों की जीवन धारा और उनके देवताओं से जुड़े हुए होते हैं। रीति रिवाजों से जुड़े हुए गीतों को संस्कार गीत कहा जाता है। ये गीत प्रकार विभिन्न संस्कार जैसे बच्चे का जन्म, नामकरण, उपनयन, विवाह आदि के समय गाया जाता है। इन संस्कार गीतों के अलावा विभिन्न पर्वों और पुजाओं में गाए जाने वाले देवी देवताओं के गीत तथा विभिन्न कार्यों के साथ जुड़े हुए गीत भी लोक गीतों के विषय बनते हैं। शारीरिक श्रम वाले काम करते हुए उसकी थकान और उबाऊपन से राहत के उद्देश्य से भी कई प्रकार के लोकगीतों की रचना की गई है। इन गीतों में माझी गीत – जैसे बंगाल का भटियाली गीत , बैलगाड़ी या तांगा चालकों के गीत – जैसे पंजाब का टप्पे, दूर तक चलकर कुओं या नदियों से महिलाओं द्वारा पानि लाने के समय गाने वाली राजस्थान का पनिहारी गीत, खेतों में बीज बोते समय, हल जोतते समय या फसल काटते समय गाने वाले गीत – जैसे तमिल नाडु के कृषकों के द्वारा गाई जाने वाली तेमणगु गीत कुछ लोकप्रिय उदाहरण हैं।

विभिन्न मौसम के भी लोकगीतों के साथ गहरा संबंध है। खास कर के वर्षा और बसंत ऋतु मानव की सृजनशीलता में उत्साह भर देतें हैं नया कुछ सृष्टि करने के लिए। इस कारण से लोक कवि और कलाकारों ने कई गीत – संगीत और नृत्य की रचना की है। इन मौसमों में कई पर्व और खेती से संबंधित कई गतिविधियां भी होतीं हैं। ऐसे लोक गीतों में होली गीत, कजरी, सावन, झूला, बारहमासा आदि बहुत लोकप्रिय गीत हैं।

संगीत और नृत्य के अलावा नाटकों के भी दो शैलियाँ होती हैं – पारंपरिक और आधुनिक। इन दो प्रकार के अलावा असंख्य लोक नाट्य की परम्पराएं हैं जो भारत के सभी प्रांतों मे पाए जाते हैं। ऐसे लोक नाट्यों में बंगाल का जात्रा, ब्रज की नौटंकी, केरल का कुटियट्टम, गुजरात का भवई आदि।

इस यूनिट में यहाँ तक आते आते अपने जरूर ध्यान दिया होगा कि नृत्य, संगीत और नाटकों के वर्गीकरण के तरीके अलग अलग हैं। जहां तक शास्त्रीय संगीत की बात है इसकी दो धाराएं पूरे देश को दो भागों में अर्थात उत्तर और दक्षिण में बांटती हैं। जब की भारत के नौ अलग अंचलों के नृत्य को उन नृत्य शैलियों की समृद्धता और सूक्ष्म रुचिशील सौन्दर्य के कारण शास्त्रीय नृत्य का दर्जा मिला हुआ है। इन दोनों कलाओं को शास्त्रीय कला का दर्जा भारत सरकार की संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत नियामक संस्था **'संगीत नाटक अकादमी'** द्वारा दिया गया है। नाटक के क्षेत्र में संस्कृत में लिखे गए प्राचीन नाटकों को पारंपरिक नाटक और आधुनिक भारतीय भाषा मे लिखे गए नाटकों को आधुनिक नाटकों का दर्जा प्राप्त है।

उपर्युक्त के अलावा भी भारत में असंख्य लोकगीत, लोकनृत्य और लोकनाट्य की शैलीयाँ हैं क्योंकि भारत एक विशाल जनसंपदों वाला देश है जिसमे भांति भांति की भाषाएं, बोली, जीवन शैली, मान्यताएं और रीति रिवाज पाए जातें हैं।

सारांश

इस यूनिट में आपने साधारण रूप से सभी भारतीय मंच कलाओं के संबंध में जानकारी प्राप्त की है। आप को भारतीय कलाओं के सिद्धांत और विभिन्न कलाओं के विभिन्न चैलियों के बारे में भी

जानकारी प्राप्त हुई है। आइए अब हम इस पाठ से मिली हुई जानकारियों को निम्नलिखित बिंदुओं मे दोहराएं –

1. वे सृजनशील विधाएं जो दर्शकों के सामने मंच पर प्रस्तुत किया जाता है उन्हें मंच कलाएं कहा जाता है, जैसे - संगीत, नृत्य और नाटक।

2. भारत सहित दुनिया के विभिन्न हिस्सों से प्रचुर मात्रा में रॉक पेंटिंग यह साबित करती हैं कि मानव सभ्यताओं के प्राथमिक दिनों में अभिनय, नृत्य और संगीत के रूप में कला का प्रदर्शन मानव समाजों में मौजूद था।

3. मानव समाज जहां जहां बसती चली गई ग्रामाञ्चल हो या नगर मंच कलाओं ने भी अपने आप को आसपास के परिवेश का अनुसार ढाल लिया।

4. मानव समाज के साथ-साथ मंच कलाओं के विभिन्न रूप विकसित हुए और धीरे-धीरे दुनिया के विभिन्न हिस्सों में पूरी तरह से विकसित प्रणालिओँ के रूप में स्थापित हो गई।

5. कला के हर विधा की अपनी भाषा होती है। मौखिक भाषा के अलावा, नाट्य कला संवाद के लिए अभिनय, वेशभूषा, लाइट और रंगमंच की सामग्री वगैरह का उपयोग करती है, नृत्य अंग संचालन द्वारा, हाथ के मुद्राओं और चेहरे के भावों के उपयोग के द्वारा संवाद करता है क्योंकि ये सब इस कला की प्राथमिक भाषा है और संगीत अपनी भाषा के रूप में ध्वनि का उपयोग करता है। अधिक प्रभावी प्रस्तुति के लिए तीनों कलाओं में संगीत का उपयोग सहायक भाषा के रूप में होता है।

6. भारतीय मंच कलाएं कुछ सिद्धांतों का अनुसरण करती है, वे हैं - सामग्री, प्रारूप, संतुलन, लय, प्रतीकात्मकता, भावनात्मक अभिव्यक्ति, अनुपात, सामंजस्य और माध्यम में दक्षता।

7. भारत में नौ शास्त्रीय नृत्य और शास्त्रीय संगीत के दो रूप प्रचलित हैं जिन्हें सरकार के नियामक निकाय संगीत नाटक अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त है।

8. रंगमंच के मामले में, संस्कृत में लिखे गए पारंपरिक नाटकों को शास्त्रीय नाटक के रूप में और आधुनिक भारतीय भाषाओं में लिखे गए नाटकों को आधुनिक नाटक के रूप में मान्यता प्राप्त है।

प्रश्नावली -

1. नीचे दिए गए उचित विकल्पों के साथ रिक्त स्थान भरें –

- दुनिया के विभिन्न हिस्सों में जो _____ पाया जाता है जो मानव समाज के शुरुआती दिनों में मंच कला का अस्तित्व साबित करता है।
- कुछ नृतत्व विज्ञानियों के अनुसार गायन, नृत्य और अभिनय की शुरुआत _____ करने के लिए हुई।
- _____ संगीत की मूल भाषा है।
- _____ कला का एक सिद्धांत है जो कला के प्रकार को आकार प्रदान करता है।
- पारंपरिक भारतीय ग्रंथों में शास्त्रीय संगीत को _____ के रूप में संदर्भित किया गया, जिसमें एक गुरु के तहत सीखने के लिए नियम निर्धारित किए थे।

- भारत में शास्त्रीय नृत्य के _____ प्रकार हैं।
- दक्षिणी भारत में सुगम संगीत को _____ के रूप में जाना जाता है।
- _____ गीत राजस्थान की महिलाओं द्वारा गाए जाते हैं जब वो दूर के जलाशय से पानी लाने जाती हैं।
- _____ गीत तमिलनाडु के किसानों द्वारा बीज बोने के समय गाए जाते हैं।

  विकल्प – नौ, पनिहारी, ललित संगीत, ईश्वर को प्रसन्न, प्रारूप, तम्मंगु, ध्वनि, रॉक पेंटिंग, मार्गी संगीत।

2. कला के सिद्धांतों पर विस्तृत रूप से लिखें।
3. अपने राज्य के मंच कला के किसी भी रूप पर विस्तृत रूप से लिखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY